।। ओ३म् ।।
कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

एक धर्म, एक भाषा एवं एक लक्ष्य के बिना भारत का पूर्ण हित एवं राष्ट्र की प्रगति होना दुष्कर है। सर्व उन्नति का केन्द्र एकता है - महर्षि दयानन्द

वर्ष ३१, अंक ७ एक प्रति : २ रुपये
सोमवार ७ जनवरी, २००८ से १३ जनवरी, २००८ तक
विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८४
सष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ वार्षिक : १०० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com

## आर्यसमाज महू (म०प्र०) द्वारा गायत्री महायज्ञ व वेदकथा सोल्लास सम्पन्न

# अकेली आर्यसमाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम : – मानो प्रान्तीय स्तर का महासम्मेलन हो

*आर्यसमाज महू (म०प्र०) के तत्वावधान में सफलता के साथ सम्पन्न हुए गायत्री महायज्ञ की चित्रमय झांकी। १. विशाल यज्ञशाला का भव्य व विहंगम दृश्य, २. उद्‌बोधन देते डॉ सुरेन्द्रकुमार, ४. समापन समारोह पर सम्बोधित करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री प्रकाश आर्य, ५, शोभायात्रा के अवसर पर झांकी में यज्ञ कराती आचार्या नन्दिता शास्त्री एवं शोभायात्रा मेंसम्मिलित मातशक्ति। ६, हजारों की संख्या में उपस्थित महिलाएं जो नित्य प्रति लगातार आठों दिन तक आती रहीं।*

*विस्तत समाचार अगले अंक में*

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक 23 दिसम्बर, 2007 को सम्पन्न

# प्रचार–प्रसार के विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय

**सांगठनिक एवं सैद्धान्तिक चिन्तन शिविर** : ग्रीष्मावकाश मे दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के प्रमुख अधिकारियों की सांगठनिक एवं सैद्धान्तिक चिन्तन शिविर का आयोजन। तिथियां तय करके सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाएगा। **क्षेत्रिय गोष्ठियों का आयोजन :** दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रिय गोष्ठयों का आयोजन क्षेत्रानुसार जनवरी–फरवरी मास में किया जाएगा। **वेद प्रचार रथ द्वारा प्रचार :** वेद प्रचार रथ यात्रा पूर्व की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार रथ से प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। **विश्व पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य स्टाल :** सभा की ओर से इस वर्ष भी गत विश्व पुस्तक मेले की भांति फरवरी, २००८ में आयोजित मेले में सभा वैदिक साहित्य प्रचार एवं विक्रय स्टाल लगाएगी। जो महानुभाव स्टाल हेतु अपना समय दान देना चाहें वे **श्री सुखबीर सिंह आर्य** (9350502175) अथवा **श्री रमेश आर्य जी** (011-25637671) से सम्पर्क करें। **होली मंगल मिलन समारोह :** गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी होली के पावन पर्व के शुभ अवसर पर होली मंगल मिलन समारोह का २१ मार्च, २००८ को आयोजन किया जाएगा। आप सभी से निवेदन है कि आप पुराने आर्यसमाजी परिवारों को जो इस समय किन्हीं कारणों से आर्यसमाज से दूर हो गए हों, उनकी सूचना सभा कार्यालय को देवें जिससे उन्हें इस समारोह में आमन्त्रित किया जा सके। आप अपने क्षेत्र के विद्वानों, अध्यापकों, राजनैतिक नेताओं को भी इस समारोह में आमन्त्रित करें। **गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार :** गुरुकुल कांगड़ी की भूमि की रक्षार्थ आवश्यक कार्ययोजनाओं तथा उनके क्रियान्वयन के निर्णय लिए गए।

– ***विनय आर्य, महामन्त्री***

गतांक से आगे

# कार्तिक अमावस को डॉ० न्यूटन महाशय का आगमन 209

– स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

पण्डयाजी ने जब आकर देखा कि उनके फेफड़े काश–श्वास से धौंकनी की भांति धौंक रहें हैं, अन्तकालीन वेदना से उनका बदन व्यथित हो गया है, उनकी परिपुष्ट काया अब अस्थि–पिंजरावशेष यष्टि बन गई है, और उनके जीवन–स्रोत के सामने उसे शोषण करने के लिए मत्यु की महामरुस्थली आ पड़ी है, तो वे पांव के तलुओं से सिर की चुटिया तक थरथर कांप गए। एकाएक उनका सिर चकरा गया, जी घुटने लगा और आंखों के आगे अंधेरा छा गया। अन्त में उन्होंने कलेजा थामकर चरण-वन्दना की और बताया कि 'श्रीमहाराणा जी आपकी व्याधि का वत्तान्त जानकर अति चिन्तित हो रहे हैं। वे रातदिन आपका स्वास्थ्य समाचार जानने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। महाराज आज आपकी परोपकार–मूर्ति की, यह अवस्था देखकर मैं भी अति अधीर हो रहा हूं। भगवन्, भारत भूमि के शुभ भाग्य-प्रभात को आहूत करने के लिए, आप ऐसे भारत–भक्तों को, अभी बड़ी भारी आवश्यकता है। ये हमारे, हमारी जाति के और हमारे देश के दुर्दिन हैं, जो आपकी दया पूर्ण देह इस दुःखद दशा में आ पड़ी हैं।"

महाराजा ने कहा, "पण्डयाजी, खेद से खिन्न न हुजिए। अब विधाता की ऐसी ही इच्छा है। देह का बनना और बिगाड़ना तो, पानी के बुलबुले और सागर की तरंग की भांति होता ही रहता है। यह मर्त्यलोक मरणाभिमुख है। कोई अनहोनी होने लगे तो उसका कोई शोक भी करे; परन्तु मिलकर टूटना, बनाकर बिगाड़ना, होकर न रहना, जन्म कर मर जाना तो जगत का अवश्यम्भावी नियम है। इसके लिए सोचना नहीं चाहिए।"

कार्तिक कृष्णा १४ को महाराज के शरीर पर नाभि तक छाले पड़ गए थे। उनका जी घबराता था, गला बैठ गया था। श्वास–प्रश्वास के वेग से उनकी नस नस हिल जाती थी। सारी देह में दाहसी लगी हुई थी। परन्तु वे नेत्र मूंदकर ब्रह्म ध्यान में वति चढ़ाये हुए थे। अजान लोग उनकी इस ध्यानावस्था को मूर्छा मान लेते थे। जब शरीर अपने व्यापार से शिथिल हो जाए और बोलने आदि की शक्ति भी मन्द पड़ जाए, तो सभी सन्तजन मनोवत्तियों को मूर्छित करके निमग्नावस्था में चले जाया करते हैं। कार्तिक अमावस्या मंगलवार, दीप माला के दिन, सवेरे, विदेशी बड़ा डाक्टर न्यूटन महाशय आया। उसने उनके रोग योग की अवस्था देखकर आश्चर्य से कहा कि ये बड़े साहसिक और सहनशील है। इनकी नस नस और रोम रोम में रोग का विषैला कीड़ा घुसकर कुलबुलाहट कर रहा है; परन्तु ये प्रशान्तचित हैं। इनके तन पिंजर को महाव्याधि की ज्वाला–जलन जलाये चली जाती है जिसे दूर से देखते ही कंपकपी छूटने लगती है। पर ये हैं कि चुपचाप चारपाई पर पड़े हैं। हिलते डुलते तक नहीं। रोग में जीते रहना इन्हीं का काम है। भक्त लक्ष्मणदास ने उनसे कहा कि महाशय ! ये महापुरुष स्वामी दयानन्दजी हैं।

यह सुनकर डाक्टर महाशय को अत्यधिक शोक हुआ। महाराज ने उस बड़े वैद्य के प्रश्नों का उत्तर संकेत–मात्र से दिया। एक मुसलमान वैद्य, पीरजी, बड़े प्रसिद्ध थे। वे भी उनको देखने आए। उन्होंने आते ही कह दिया– 'इनको किसी कुलकण्टक ने कालकूट विष देकर अपनी आत्मा को कालिख लगाई है। इनकी देह पर सारे चिह्न विष प्रयोग जन्य ही दिखाई देते हैं। पीर जी ने भी महाराज का सहन–सामर्थ्य देख दांतों में उंगली दबाते हुए कहा, धैर्य का ऐसा धनी, धरणी–तल पर हमने दूसरा नहीं देखा।'

इस प्रकार राजवैद्यों और भक्तजनों के आते जाते दिन के ग्यारह बजने लगे। रोगी का साँस अधिक फूलने लगा। वे हाँपते तो बहुत थे परन्तु बोलने की शक्ति कुछ लौट आई थी। उनका कण्ठ खुल गया था। इससे प्रेमियों के मुखमण्डलों पर प्रसन्नता की रेखा खेलने लगी; परन्तु पीछे जाकर उन्हें पता लगा कि वह तो दीपक–निर्वाण की अन्तिम प्रदीप्ति थी। सूर्यास्त का उजाला था।

– **'श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश' से**

**क्रमशः**

# विद्यालय विद्या के मन्दिर हैं : इन्हें यौनालय मत बनाइये

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में स्पष्ट लिखा है कि 'मातमान, पितमान, आचार्यवान पुरुषों वेद। यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक माता–पिता और आचार्य होंवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता–सन्तानों पर प्रेम व उनका हित करना चाहते हैं, उतना कोई नहीं करता। अतः बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा देवें, जिससे सन्तान सभ्य हो और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श और मर्दन से वीर्य की क्षीणता और नपुंसकता होती है और हस्त से दुर्गन्ध भी आती है। इससे उसका स्पर्श न करें। सदा सत्यभाषण, शौर्य, धैर्य, प्रसन्नवदन आदि गुणों की वद्धि ही करावें। इस प्रकार सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट लिखा है कि बालक व बालिकाओं को उनकी माता ही प्रथम शिक्षा प्रदान करे। यूं भी हर माता अपनी सन्तान को जन्म से ऐसी शिक्षा प्रदान करती है कि वे कोई गलत कार्य न करें।

किन्तु खेद व लज्जा का विषय है कि भारत सरकार विद्यालयों में यौनशिक्षा लागू करने के लिए कटिबद्ध है। विद्यालय विद्या के मन्दिर हैं, इन्हें यौनालय मत बनाइये, अन्यथा ये विद्या के मन्दिर यौन अड़डे बन जाएंगे व भारत का भविष्य, ये बच्चे बरबाद हो जाएंगे।

यौन शिक्षा की यह धारणा बिल्कुल नई है। इसका आरम्भ संयुक्त राज्य अमेरिका में २१वीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ। एक सर्वेक्षण के अनुसार पश्चिमी देशों के विद्यालयों में यौनशिक्षा के कारण वहां के परिणाम अनैतिक ही नहीं घातक भी हैं। पाश्चात्य देश तो चाहते ही हैं कि भारत जैसा विशाल देश जो अपनी सभ्यता एवं संस्कति के कारण विश्व का सिरमौर है, केवल रंग–रूप से ही भारतीय कहलाए; किन्तु उनका रहन–सहन, खान, पान, भाषा सब विदेशी हो।

एकादश समुल्लास में दिया गया यह दष्टांत उचित होगा कि जैसे कोई एक व्यक्ति चोरी करता पकड़ा गया था। न्यायाधीश ने उसकी नाक काट डालने का दण्ड दिया। जब उसकी नाक काटी गयी तब धूर्त हंसता क्यो हैं? उसने कहा कुछ कहने की बात नहीं है। लोगों ने पूछा–ऐसी कौन सी बात है? उसने कहा बड़ी भारी आश्चर्य की बात है, हमने ऐसी कभी नहीं देखी। लोगों ने कहा–कहो! क्या बात है? उसने कहा कि मेरे सामने साक्षात् चतुर्भुज नारायण खड़े हैं। मैं देखकर बड़ा प्रसन्न होकर नाचता, गाता अपने भाग्य को धन्यवाद देता हूं कि मैं नारायण के साक्षात् दर्शन कर रहा हूं। लोगों ने कहा हमें नारायण के साक्षात् दर्शन क्यों नहीं होते? वह बोला नाक की आड़ हो रही है। जो नाक कटवा डाले तो नारायण दिखें, नहीं तो नहीं। उनमें से किसी मूर्ख ने चाहा कि नाक जाए तो जाए; परन्तु नारायण के दर्शन अवश्य करने चाहिए। उसने कहा मेरी भी नाक काटो, नारायण को दिखलाओ। उसने उसकी नाक–काटकर कान में कहा कि तू भी ऐसा कर, नहीं तो मेरा और तेरा उपहास होगा। उसने भी समझा अब नाक तो आती नहीं, इसलिए ऐसा ही कहना ठीक है। तब तो वह भी वहां उसी के समान नाचने–कूदने, गाने–बजाने और हंसने लगा कि मुझको भी नारायण दिखते हैं, वैसे ही होते–होते एक सहस्र मनुष्यों का झुण्ड हो गया।

यही हाल पाश्चात्य देशों का है। ''हम तो डूबे हैं सनम तुम्हें भी ले डूबेंगे।'' किन्तु उन्हें यह पता होना चाहिए कि भारतीय अभी जागरुक हैं, वे अपने देश में कोई ऐसी नीति लागू नहीं करने देगें, जिससे उनकी सभ्यता और संस्कति को धक्का पहुंचे, इसके लिए उन्हें आन्दोलन भी करना पड़ा तो करेंगे।

शिक्षा निदेशालय कर्बला मार्किट बी. के. दत्त कालोनी नई दिल्ली की तरफ से यौन–शिक्षा लागू करने के पक्ष में एक सेमिनार हुआ। यह सेमिनार ०४ अक्टूबर २००४ से ०८ अक्टूबर २००४ तक सरोजनी नगर के एक सरकारी विद्यालय में आयोजित हुआ जिसमें मैंने व मेरे विद्यालय की एक अध्यापिका श्रीमती ऊषा रिहानी ने भाग लिया था। उस सेमिनार के अनुसार जिस प्रकार की यौन–शिक्षा का प्रस्ताव सरकार का है वह अत्यन्त ही कामुकता को बढ़ाने वाला है। उसमें 'सुरक्षित यौन सम्बन्धों'' के बारे में जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त उस विद्यालय के छात्रों को बुलाकर बिठाया गया। एक प्रश्न पेटी रखी गयी जिसमें छात्रों को कहा गया कि वे एक पर्ची पर अपना नाम लिखे बिना प्रश्न लिखें और उसका उत्तर पूछें, जिस प्रश्न को वे सबके सम्मुख स्पष्ट रूप से पूछने में संकोच कर रहे हों। कुछ छात्रों ने जान–बूझकर वाहियात प्रश्न पूछे, यह भी कहा गया कि सभी लड़कियों को अपनी सुरक्षा हेतु अपने टिफिन–बॉक्स में अनिवार्य रूप से कंडोम रखना चाहिए।

मैं समस्त अभिभावक वर्ग से यह पूछना चाहूंगी कि क्या वह चाहेंगे कि उनके बच्चों को सुरक्षित यौन सम्बन्धों के उपाय बताकर उनके लिए 'नरक' का द्वार खोल दिया जाए। विद्यालयों का जो हाल हो रहा है और आज के अध्यापक प्रधानाध्यापक जिस मानसिकता वाले हो रहे हैं उसको देखते हुए बच्चों को यौन–शिक्षा या सैक्स एजुकेशन से दूर रखा जाए तो बेहतर होगा। माता–पिता या निकट सम्बन्धी ही धैर्यपूर्वक संक्षेप में तथा मर्यादित शब्दों में बच्चों की जिज्ञासाएं शांत करें तथा उन्हें अवांछित स्थितियों सें अपनी सुरक्षा करने की जानकारी दें। अधिक टी.वी. देखने के कारण बच्चे छोटी उम्र में ही बहुत कुछ जानने–समझने लगते हैं, उन्हें उचित शिक्षा–निर्देश उनके अभिभावक ही दे सकते हैं।

*– श्रीमती तप्ता शर्मा*
**रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल,**
**राजा बाजार, नई दिल्ली-१**

### आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्यसमाज शिवाजीनगर गुड़गांवा के तत्वावधान

## स्वामी श्रद्धानन्द का ८१वां बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गांवा के संयुक्त तत्वावधान में गुड़गांवा की समस्त आर्यसमाजों की ओर से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का ८१ वां बलिदान दिवस शनिवार दिनांक २२ व २३ दिसम्बर २००७ को आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गांव में समारोह पूर्वक मनाया गया।

शनिवार २२ दिसम्बर को प्रातः यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार ने यज्ञ कराया। तत्पश्चात आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि, आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान और लेखक डॉ. सुरेन्द्र कुमार तथा आर्यवीर दल हरियाणा के श्री वेद प्रकाश ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर विस्तत रूप से प्रकाश डाला। इसके बाद ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ और अपराह्न २.०० बजे विशाल शहीदी जुलूस शहर में निकाला गया।

शहीदी जुलूस में हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिये जुलूस का नेतत्व आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के ब्र०राजसिंह तथा डॉ० राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने अलग अलग बग्गियों में बैठकर किया। सर्वप्रथम ओ३म् ध्वज के साथ आर्यवीर थे उनके पीछे घुड़सवार, प्रदर्शन कर रहे थे। स्त्री पुरुष आर्य समाज की भजन मंडलियां झूमते गाते हुए शहर में निकली शोभायात्रा को शोभायमान कर रहे थे वास्तव में नजारा देखने लायक था।

शहीदी जलूस आर्यसमाज शिवाजी नगर से प्रारम्भ हुआ और शहर की मुख्य सड़कों और मुख्य बाजारों से होता हुआ आर्य समाज भीमनगर में सम्पन्न हुआ जहां सभी का स्वागत और धन्यवाद किया गया तथा प्रसाद वितरण भी हुआ।

रविवार २३ दिसम्बर,०७ को प्रातः यज्ञ के उपरान्त भजनों का कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर स्वामी श्रद्धानन्द को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गयी। वैदिक विद्वान डॉ० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित पुस्तक पं. शान्ति प्रकाश शस्त्रार्थ महारथी द्वारा पुस्तक का विमोचन भी किया गया। गुड़गांव के शास्त्रार्थ महारथी पं. शान्ति प्रकाश ने जीवन पर जिज्ञासु जी ने स्वामी ली के जीवन पर संक्षिप्त रूप में प्रकाश डाला और पं. शान्ति प्रकाश केपरिवार को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की सुपौत्री श्रीमती पुष्पा शोभा को व उनके पौत्र को भी समारोह में आमंत्रित कर सम्मानित किया गया।

मंच का सफल संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री मास्टर

## सात मर्यादाओं के पालन से सफलता

**- आचार्य विश्वबन्धु**

वेदों के अनुसार मानव–जीवन की सफलता का रहस्य सात मर्यादाओं के पालन में निहित है। यह विचार आर्य समाज बी–ब्लॉक जनकपुरी के सत्संग में आचार्य विश्वबन्धु जी ने व्यक्त किये। सात की संख्या के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जैसे सूर्य की सात किरणे हैं, सप्त सिन्धु हैं, वैसे ही मानव के लिए सात मर्यादाएं भी निर्धारित की गयी है जिनके पालन से कोई भी मनुष्य महान् बन सकता है तथा जीवन को सफल बना सकता है। आचरणीय सात मर्यादाएं हैं– **समयमान, सत्यवादिता, स्वाध्याय, स्वाभिमान, सत्संग, सदाचार और सरलता।** नेपोलियन के एक सैनिक को जो समय से पांच मिनट विलम्ब से पहुंचा था और जिसे नेपोलियन की फटकार सुननी पड़ी थी, के उदाहरण से आचार्य जी ने समयबद्धता के महत्व को समझाया। सत्य का जीवन में कितना महत्व है इसे आर्य समाज के चौथे नियम से समझा जा सकता है।

इस अवसर पर माननीया उत्तमायति जी के भजनोपदेश का लाभ तो सत्संग प्रेमियों ने उठाया ही, उनके विदेश यात्रा के संस्मरणों से भी वे लाभान्वित हुए। विदेशों में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की क्या स्थिति है और वहां के लोग कितनी श्रद्धा के साथ इन प्रवचनों में आते हैं, जब इसकी जानकारी उत्तमायति जी ने दी तो हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

वैदिक विद्वान आचार्य विश्वबन्धु जी और उत्तमायति जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आर्यसमाज के प्रधान डॉ.सुन्दरलाल कथूरिया ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि महर्षि जी का ''कण्वन्तों विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार हो रहा है। कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य समाज के मंत्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया।

*– मन्त्री*

## ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (22)

*– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'*

**अधिकं तु भेदनिर्देशात्।।२२।।**

*अर्थ* :- (अधिकं) अधिक अर्थात् महान् (तु) तो (भे–निर्देशात्) भेद बताए जाने से।

निमग्न है। ब्रह्म प्रकति में अन्तर्यामीरूप में व्याप्त है। उस प्रकति से यह पुरूष (जीवात्मा) शरीर आदि प्राप्त करके हदय वेश में निवास करता है। यह

फिर बग्गियों, बैण्ड बाजे विभिन्न आर्यसमाजों और गुरूकुलों की झांकियां, भजन मण्डलियां, ट्रैक्टर ट्रालियां आदि और विभिन्न विद्यालयों के बच्चे, अध्यापक, अध्यापिकाओं जलूस की शोभा बढ़ा रहे थे आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के ब्रह्मचारी एवं गुरूकुल भादस के ब्रह्मचारी जलूस में चलते हुए अपनी कला और व्यायाम का सोमनाथ ने किया और अन्त में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आने से उनके विचारों को सुनने से और उनके द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने से स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन ही बदल गया और अन्त में वे देश और धर्म पर बलिदान होकर अमर हो गये। — **मन्त्री**

---

### आर्यसमाज भेरा इन्क्लेव नई दिल्ली का

## वार्षिकोत्सव एवं विकलांगों पर विशेष कार्यक्रम

**रविवार १३ जनवरी २००८ प्रातः ८.०० से दोपहर, १.३० बजे**

यज्ञ एवं प्रसाद वितरण : प्रातः ८.०० से प्रातः१०.०० बजे तक

**ब्रह्मा :** आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा शास्त्री एवं आचार्य प्रमोद कुमार

**भजन एवं प्रवचन :** श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' एवं साथी

**सांस्कतिक कार्यक्रम :** झब्बन लाल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एवं एस.एल. सूरी, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा

**विकलांगों में ट्राई साईकिल वितरण :** दोपहर १२.१५ बजे से

**मुख्य वक्ता :** डॉ. महेश विद्यालंकार जी

**अध्यक्षता :** श्री रामनाथ सहगल जी

— ***चन्द्र मोहन खन्ना*** (प्रधान) ***प्रेम बिन्द्रा*** (मंत्री)

---

बोध कथा

## मानव जीवन का उद्देश्य

— ***महात्मा आनन्द स्वामी***

एक व्यक्ति बाजार से दो बड़ी लकड़ियां खरीदता है और दो छोटी। चार पाये खरीदता है, कुछ सूत्री। सबको इकट्ठा करके बुनना शुरू करता है। उससे पूछिए कि " यह सब कुछ क्यों कर रहे हो?" तो वह कहेगा—" चारपाई बना रहा हूँ।

पूछिए— "चारपाई बनाकर क्या करेगा?"

वह कहेगा— "सोऊँगा।"

यह ठीक उत्तर है। छोटी—सी चारपाई का उद्देश्य हम जान सकते हैं। इतने बड़े मानव—जीवन के उद्देश्य का ही पता नहीं। ❑

---

*भावार्थ :-* ब्रह्म जीवात्मा से अधिक महान् है क्योंकि शास्त्रों में इन दोनों में भेद बताया गया है।

इस प्रश्न का आधार यह भ्रांति है कि ब्रह्म स्वयं जीवात्मा के रूप में इस जगत् में उपस्थित होता है। सूत्रकार ने इसे अस्वीकार कर दिया है कि ब्रह्म स्वयं भोक्ता नहीं है। वह एक पथक तत्व है और वह जीव से श्रेष्ठ है, इसके अतिरिक्त ब्रह्म जो जगत् की रचना करता है वह अलग है। जीव अल्पश, अल्पशक्ति, परिच्छित्र, चेतन तत्व है और ब्रह्म सर्वश, सर्वशक्तिमान, सविन्तर्यामी और चेतन है। ये दोनों कभी एक नहीं है, इनमें भेद स्वाभाविक है। इसलिए ब्रह्म जीव नहीं, वह जीव से श्रेष्ठतर और अधिक महान् है, क्योंकि यही शास्त्र का कथन है। बहदारण्यक उपनिषद् (३.७.२२) में कहा है—

**"यो विज्ञाने तिष्ठन् विज्ञानादन्तरों यं विज्ञानं न वेद, सस्य विज्ञानं शरीरम्।।"**

अर्थात् जो विज्ञान स्वरूप आत्मा (विज्ञान) में रहता हुआ भी विज्ञान से भिन्न है, जिसे विज्ञान (आत्मा) नहीं जानता है और विज्ञान जिसका शरीर हैं। शास्त्रों में ब्रह्म और जीव को अनेक प्रकार से बताया गया है। मुंडक उपनिषद् (३.१.२.) में कहा है—

**"सामने वक्षे पुरूषों निमग्नो३नीशया शोचति मुह्यमानः। जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोकः।।"**

यह पुरुष प्रकति रूपी वक्ष में अनीश (ईश्वर से भिन्न आत्मा) अल्पशक्ति होने से अज्ञान से घिरा हुआ दुःखी होता है। जब वह अपने से भिन्न (अन्य) ऐश्वर्यशाली (ईश) परब्रह्म को देख लेता है और उसकी महिमा को जान लेता है, तब शोकरहित हो जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि ब्रह्म जीवात्मा से भिन्न है। वह स्वयं संसार में जीवात्मा के रूप में भोक्ता बनकर नहीं आता और जब यह निश्चित हो जाता है कि ब्रह्म ही जगत् के जन्मादि का निमित्तकारण है। इस विषय में किसी प्रकार की आशंका नहीं रहती। वस्तुतः जगत् के पदार्थों का भोक्ता जीवात्मा है, ब्रह्म तो मात्र उसका द्रष्टा और नियन्ता है। इसलिए यह कहना कि जगत् की रचना से ब्रह्म पर अपना हित न करने या अहित करने का दोष आता है—निराधार है।

जिन शास्त्रों के प्रमाणों से जीव और ब्रह्म में एकता प्रतीत होती है, जैसे पूर्व सूत्र में कहे गये" तत्वमसि श्वेतकेते।" हे श्वेतकेतो! वह तू है। यह केवल यह स्पष्ट करने के लिए है कि जीवात्मा के भीतर परब्रह्म व्याप्त है।

— शिष्य जानना चाहता है कि जीवात्मा में ब्रह्म व्यापक है, फिर ब्रह्म के गुण जीवात्मा में क्यों नहीं पाए जाते? इसका समाधान सूत्रकार ने अगले सूत्र में किया है।

— ***सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८***

## Question & Answer

# Creation is eternal

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

**The questions are answered by Swami Ramswarup ji.**

**Q. :** My husband I want to learn Sanskrit. It was our sheer luck that we have studied Sanskrit, so we can read. Please guide us how to go about it. I keep checking people who do wrong things and tell them it is wrong. At times when people don't listen I inform higher authorities that this wrong thing is happening. Am I correct? Please guide me. Further I feel we all go to temples and places of worship but do not follow those words which will change us internally. Neither pay respect to our nation, do duties to nation or our own people. Example, we spit on roads, throw dirt on roads rivers, cut trees, do not walk on footpaths and countless other things which will improve our nation and society a lot. Recently my husband has gone to Germany he narrated me an incident that a plastic bag was lying on the road, then a lady came picked it up and had put in the dustbin. Why don't we learn all these good things I think thus we improve our nation? One thing is required I feel good teachers and good schools and educated mothers which will change our country. How can we achieve this? **Rashmi Sahu**

**Ans.. :** To learn Sanskrit is a pious thought. You may contact nearest Arya Samaj mandir. The representative of the mandir will advise you suitably. It is good to inform higher authorities about the wrong deeds but now a days one should be alert about the mischievous persons, because they will try to harm you.. Yes, you are correct, mostly the people do not obey the preachings because mostly the preach is based on bookish knowledge only duly indulged in illusion. That is why, Vedas like Yajurveda mantra 40/10 state that preach must only be listened from the Acharya who knows Vedas as well as is perfect in Ashtang Yoga Practice. I have been in U.S.A and other countries and have realized that they follow the government rules and regulations. They always try to keep the roads and public places as well as their residences quite neat and clean. There are laws and government makes the people to comply with the laws strictly. Now, the people have become habitual

# वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

वाल्मीकिरामायणं खलु कवितायाः प्रथमा आविष्कतिः। अतिघोरया तपश्चर्यया नितान्त–निर्मलस्वावन्तेन आदिकविना महर्षिणा वाल्मीकिना जीवनस्य सार्वभौमसिद्धान्तानां यद्दर्शनं विहित तर्द्व वस्तुतों वाल्मीकिरामायणम् वाल्मीकिरामायणे पतितपावनीं रामकथामाश्रित्य कविना या काव्यसष्टिः या च शाश्वती जीवनदष्टिः मानवदेहधारिणां कते समुपायनीकता सा सत्पथदीपिकेव सदा सन्मार्ग प्रथयति।

वाल्मीकिरामायणे यज्जीवनदर्शनमुपलभ्यते तन्नूनं नैतिक मूल्यैरार्यमर्यादइाभिश्च परिपूर्ण विद्यते। मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिवाल्मीकिः सीतारामलक्ष्मणभरतहनूमत्सुग्रीवादीनां चरित्रचित्रणव्याजेन यानि नैतिकमूल्यानि वर्णयामास तान्यनुसत्यैव मानवः सुखं शान्ति सम्पन्नतां च प्राप्तुं शक्नोति।

आदिकवेर्जीविनदष्टिः जीवनस्य सर्वानपि पक्षान् प्रमुखतश्च परिवार–समाज–राजनीत्यादिविषयान् विशेषतया विद्योतयामास। परिवारे पारस्परिकं सौहार्द, पित्रोराज्ञापालनं, भव्यो भ्रातभावः, प्रगाढं च दाम्पत्यंसुखस्य मूलम् इत्यस्ति ऋषेर्वाल्मीकेः दिव्यदष्टिः।

अतएव वाल्मीकिरामायणस्य नायको रामः पितराज्ञायाः परिपालनाय शक्यमशवयं सर्वमपि कर्तुं तत्परः। तस्य गर्वोविक्तरियम्–

''अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावे। भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं मज्जेयमपि चार्णवे।।
नियुक्तो गुरूणा पित्रा नपेण च हितेन च।।
तद् ब्रूहि वचनं देवि राज्ञो यदभिकांक्षितम् ।करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते।।

२–१५–१५–१७

— **क्रमशः**

## सरल सत्यार्थ प्रकाश

***सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक***

to comply with the law. Whereas in India, the people have become habitual to spread litter etc., on the road and other public places. It is government's duty to make the people understand and comply with the laws. Yes, the social workers should also come forward to educate the people. In the beginning, right from the school, the duties towards the nation must be taught. One thing more, the foreigners are observing and love their nation because of the good teachings imparted to them right from the school, but in India, in addition, spiritualism must also be spread to achieve the best results. But here question arises "Who will bell the cat?" Now a days most of the societies are involved in corruption etc. We need social workers but those who are able to reform the society. But first they must've reformed themselves, first deseve then desire.

**To be continued...**

**वेद–वाणी**

**साधना चैनल**

**हर रविवार सायं 6.55 बजे**

**रविवार 13 जनवरी, 2008**

**–: प्रवचन :–**

**आचार्य अखिलेश्वर जी**

**–: प्रसारण-सहयोगी :–**

**आर्यसमाज कीर्ति नगर**

नई दिल्ली–110015 **एवं**

**पूज्य पिता श्री दुर्गादास सेखरी की पुण्य स्मृति में**

**श्रीमती सन्तोष व श्री विश्वनाथ सेखरी**

19/77, पंजाबी बाग, नई दिल्ली–26

**आर्यसमाज डी ब्लाक जनकपुरी का**

## तीसरा वेद सन्देश वार्षिकोत्सव

**११-१३ जनवरी, २००८**

स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी में
यज्ञ : प्रातः ७.१५ से ८.२५ बजे
ब्रह्मा : श्री सोमदेव शास्त्री
भजन : बहन सुदेश आर्या
प्रवचन : डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार
भजन–प्रवचन : सायं ७ से ६ बजे
**समापन समारोह : १३ जनवरी, ०८**
स्थान : डी१ ए पार्क, जनकपुरी
यज्ञ–भजन–प्रवचनः प्रातः ८.३०–१ बजे
भजन : बहन सुदेश आर्या
प्रवचन : डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार
श्री विश्वबन्धु शास्त्री
ऋषि लंगर : कार्यक्रम के अन्त में

आप सब अधिकाधिक संख्या में इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

*– दिनेश आहूजा, प्रधान*
*कर्मयोगी, मन्त्री*

## सप्तम समुल्लास : ईश्वर और वेद

*गत अंक से आगे –*

जबकि 'प्रार्थना' से अपने अन्दर निरभिमानिता, उत्साह, सहायता का विश्वास आदि मिलते हैं तथा 'उपासना' से परब्रह्म से मेल और साक्षात्कार होते हैं।

ईश्वर के रूप में 'चेतन' तत्त्व 'एक' एवं 'जीव' के रूप में चेतन तत्व अनेक हैं। 'अवतार' लेने की बात ईश्वर में नहीं घट सकती। वेदार्थ के न जानने, साम्प्रदायिकों के बहकाने आदि के कारण ही भ्रमवश ऐसा माना जाता है। क्योंकि जन्म लेने वाला मरेगा भी अवश्य। अर्थात तब ईश्वर भी जन्म-म्त्यु के चक्कर में फंस जायेगा। यूं तो 'जीव' भी अनादि और अनन्त हैः अर्थात् वह भी काल के बन्धन में नहीं पड़ता। ईश्वर द्वारा रचित होने पर शरीर और उसकी इन्द्रियां आदि 'जीव' के अधीन रहती है। इनके माध्यम से काम करने वाला 'जीव' ही अपने कर्मों के फल का भोक्ता हो सकता है, ईश्वर नहीं। जैसे 'जीव' अपने काम करने में स्वतंत्र हैं, वैसे ही परमेश्वर न्याय आदि अपने कार्यों में स्वतंत्र है। इच्छाद्वेष–प्रयत्न, सुख–दुख, ज्ञान, प्राणापान आदि जीवात्मा के गुण हैं, परमात्मा के नहीं। इन्हीं गुणों से उसकी प्रतीति करनी चाहिए। जीवात्मा के शरीर में रहने तक ही ये गुण शरीर में रहते हैं, उसके जाते ही ये भी चले जाते हैं। अतः ये गुण जीवात्मा के ही हैं। परमात्मा तो तब भी अणु–अणु में व्याप्त होने से वहां रहता है। अतः ईश्वर और जीव पृथक-पथक हैं। परमेश्वर तो शरीर में प्रविष्ट हुए जीवों के साथ अनुप्रविष्ट के समान रहकर वेदों के माध्यम से सब नाम रूप आदि की विद्या को प्रगट करता है तथा जीवों को शरीर में प्रविष्ट कराके स्वयं उनमें अनुप्रविष्ट के रूप में ही रहता है। इसलिए जीव और अन्तःकरण तो शरीर की गति के साथ-साथ गति करते हैं, किन्तु ब्रह्म सदा स्थिर ही रहता है। दोनों एक दूसरे में बदल भी नहीं सकते। ईश्वर सत्चित और आनन्दरूप है। जीव केवल सत् और चित् और आनन्द रहित है, इसीलिए उसे आनन्द की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। किन्तु अचेतन होने से प्रकति केवल 'सत्' अर्थात् सत्तावान् ही है। अचेतन होने से वह 'जड़' है।

### वेदों का प्रकाशन

निराकार होकर भी परमेश्वर सर्वशक्तिमान होने और सर्वव्यापक होने से सब जीवों में व्याप्त हैं इसीलिए वेदादि का उपदेश करने मे उसे किसी मुखादि की सहायता की आवश्यकता नहीं रहती । वह तो वेद–स्वरूप अखिल विद्या का प्रकाश जीवनरूप में स्थित आत्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर इसी प्राप्त ज्ञान को मनुष्य अपने मुख से दूसरों को सुनाता है।

**–: क्रमशः :–**

**साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश**

## दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में

# स्वामी श्रद्धानन्द जी का 81वाँ बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में दिनांक २५ दिसम्बर, २००७ को अमर हुतात्मा महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा गुरूकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी महराज का बलिदान दिवस बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम स्वामी जी के नया बाजार स्थित भवन जिसे अब **''स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन''** के नाम से जाना जाता है में यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ प्रातः ८.०० बजे आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ, जिसमें मुख्य यजमान के रूप में **श्रीमती दिव्या गुप्ता एवं श्री मनोहर लाल गुप्ता, श्रीमती कमलेश चौधरी एवं श्री राजेन्द्र चौधरी तथा श्रीमती शशि गर्ग एवं श्री संतोष गर्ग** ने भाग लिया। यज्ञ की समस्त व्यवस्था आर्य समाज नयाबांस की ओर से की गयी थी।

यज्ञ के उपरान्त १०.०० बजे एक विशाल शोभायात्रा का प्रारम्भ किया गया, जिसका संचालन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक एवं टंकारा ट्रस्ट के मंत्री **श्री रामनाथ सहगल** ने किया। श्री सहगल जी शोभायात्रा में सम्मिलित होने वालों का उत्साहवर्धन व मार्गदर्शन कर रहे थे। शोभायात्रा का नेतत्व **डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती** एवं **श्री राजसिंह भल्ला** सहित आर्य संन्यासियों की टीम ने किया।

शोभायात्रा का बहुत ही सुन्दर ढंग से नियत्रंण व व्यवस्था आर्यवीर दल के अधिकारियों **सर्वश्री ब्रहस्पति आर्य, जितेन्द्र भाटिया, विजेन्द्र आर्य** ने **श्री वीरेन्द्र आर्य,** मुख्य संचालक के नेतत्व में बड़ी कुशलता एवं कर्मठता से की गई। आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की समस्त शाखाएं अपने–अपने शाखा नायकों सहित पूरे आयोजन में सम्मिलित थीं। शोभायात्रा में दिल्ली तथा आसपास नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद, रोहतक, बहादुरगढ़, गुड़गांवा तथा अन्य स्थानों के हजारों लोगों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। पूरे एन०सी०आर० की आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं डी०ए०वी० स्कूलों ने अपने वाहनों को अच्छी तरह लाउडस्पीकर ओ३म् ध्वज व बैनरों से सजाकर इस शोभायात्रा में पूर्ण उत्साह से भाग लिया। शोभायात्रा में स्वामी जी के जीवन की विभिन्न घटनाओं पर आर्य समाजें एवं आर्य शिक्षण संस्थाएं काफी अच्छी अच्छी झांकियां समाज सीताराम बाजार, सहित आर्यसमाज दीनवान हाल की ओर से शोभायात्रा मार्ग पर स्वागत की व्यवस्था की गई थी।

शोभायात्रा का प्रथम जत्था समारोह स्थल सुभाष मैदान में लगभग एक बजे पहुँचा तब शोभायात्रा का अन्तिम छोर नयाबाजार में था। इस विशाल शोभायात्रा का नजारा देखते ही बनता था।

मुख्य समारोह का प्रारम्भ आर्य जगत के युवा भनजोपदेशक **पं० राजवीर शास्त्री** के मधुर भजनों से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान **ब्र० राजसिंह आर्य** ने की तथा मंच पर आमंत्रित अतिथि के रूप में **श्री अजय सेठ श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री, श्री रामकष्ण तनेजा, श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता, ब्र० नन्दकिशोर** उपस्थित थे। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए उत्तराखण्ड से पधारे वैदिक विद्वान **श्री विनय विद्यालंकार** ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पूर्ण शिक्षा का स्तर देने का पूरा प्रयास किया। राष्ट्रीय उत्थान एवं स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान तथा आज दिया था। **बहन ब्र. सुमेधा आर्या** ने भी सभा को सम्बोधित किया।

विचार टी.वी. चैनल से श्री यशप्रिय आर्य ने भी सभा को सम्बोधित करते हुए आधुनिक प्रचार माध्यमों की आवश्यकता पर बल दिया और इसी क्रम में विचार टी.वी. चैनल की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अनेक आर्य बन्धुओं ने अपने स्तर पर इसमें शेयर खरीदने की इच्छा व्यक्त की एवं संकल्प-पत्र भरा।

इस अवसर पर **श्री चांदसिंह आर्य** प्रधान व्यायाम शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल को डॉ० मुमुक्षु आर्य अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल पुरस्कार'' एवं स्वामी **गुरूकुलानन्द कच्चाहारी** को श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मंच का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान **श्री धर्मपाल आर्य** ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात सभा के महामंत्री **श्री सुरेन्द्र कुमार रैली** ने सभा का आभार व धन्यवाद किया।

ऋषि लंगर के रूप में ३६ वर्षों से लगातार इस सेवा में रत पूरे परिवार का हम आभार व्यक्त करते हैं। इस बार भी माता **कैलाशवन्ती**

## मेरा है ऐलान

भूल गई श्रीराम को, भारत की सरकार।
रामसेतु तुड़वा रही, दूषित हुए विचार।।
दूषित हुए विचार, स्वार्थीजन हैं नेता।
कुर्सी के हैं दास, दिखाई देश न देता।।
ईश्वर से ना प्रेम, फकत है दौलत प्यारी।
धर्म, कर्म को त्याग, गए बन भष्टाचारी।।
श्रीराम प्रभु भक्त थे, महावीर बलवान।
मानवता के पुंज थे, भारत की वो शान।।
भारत की शान, उन्हें प्रजा भी प्यारी।
श्रीराम थे माता–पिता के आज्ञाकारी।।
पावन वैदिक धर्म, निभाया श्री राम ने।
दानव दल का वंश मिटाया,श्री राम ने।।
मालवीय जी, तिलक जी का है जग में नाम।
श्रीराम के भक्त थे, किया घोर संग्राम।।
किया घोर संग्राम, विधर्मी राज्य हिलाया।
वीर लाजपत राय, पापियों से टकराया।।
गांधी, मोतीलाल, राम के रहे उपासक।
श्रीराम थे देव पुरूष, क्यों करते खलसक।।
विश्मिल, शेखर, भगतसिंह थे बांके बलवान।
देश धर्म, पर हो गए हँस–हँस कर कुर्वान।।
हँस–हँस कर कुर्बान हुए योद्धा बलशाली।
जिनके यश के गीत रही गा दुनिया सारी।।
श्री राम को देव पुरूष कुल जग ने माना।
जगतगुरू ऋषि दयानन्द ने उनको जाना।।
स्वार्थी नेताओं सुनो सभी खोलकर कान।
रोओगे घर बैठकर, मेरा है ऐलान।।
मेरा है ऐलान छिनेगी तुमसे सत्ता।
कर लो इसको नोट कटेगा सबका पत्ता।।
आर्यवर्त में राज राम के भक्त करेंगे।
स्वर्ग बनेगा देश, प्रजा के कष्ट हरेंगे।।

**– पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य,**
ग्राम+पत्रालय बहीन, जनपद– फरीदाबाद (हरियाणा)

बनाकर लायीं थीं। शोभायात्रा का मार्ग में जगह-जगह पर स्वागत किया गया आर्यसमाज नया बांस, आर्य के सन्दर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द जी की शिक्षाओं की ओर ध्यानाकर्षण किया, जहां आज बच्चों को यौन शिक्षा दिए जाने का प्रयास हो रहा है वहीं स्वामी श्रद्धानन्द ने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति में सहशिक्षा को भी स्थान नहीं **हविष्कत परिवार** एवं उनके दामादों श्री **जितेन्द्र भाटिया** एवं **श्री देवेन्द्र जावा** की ओर से ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

***– जयप्रकाश शास्त्री, कार्यालयाध्यक्ष***
***आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली***

**आर्यसन्देश - प्रथम अंक : प्रेरक व्यक्तित्व**

## गत शताब्दी में आर्यसमाज के महोपदेशक स्व० श्री विश्वनाथ जी

उन्हीं के अपने शब्दों में ''मेरा जन्म सौर सं० १६४४ वि. को गांव मत्रकपुर जि० स्यालकोट (अब पाकिस्तान में) के वत्स गोत्रीय क्षत्रियों के महेन्द्रू वंश में हुआ। गोत्रकर्ता राजर्षि वत्स काशीराम पतर्दन के पुत्र महर्षि कण्व के शिष्य ऋग्वेद मण्डल–८ सूक्त ६–७ और ११ के ऋषि द्रष्टा हुए। पतर्दन और महर्षि कण्व भी वेद मंत्र दष्टा ऋषि हुए। श्री वत्स के नाम से वत्स देश में प्रसिद्ध हुआ। उसी वंश में...खुशीराम जी मेरे पिता धर्मात्मा और सत्यवादी प्रसिद्ध थे। अतः मुझमें शैशवकाल से ही धार्मिक लग्न थी। १२ वर्ष की आयु में विवाह हो गया। पांचवी कक्षा उर्दू पढ़कर अपने कुल पुरोहित विद्वान पंडित ठाकुरदत्त जी से त्रिकाल संध्या पुरूष सूक्त विष्णु सहस्र नाम और गीता पढ़ी। पुनः उन्हीं की प्रेरणा से संस्कत व्याकरण लघु सिद्धान्त कौमुदी का आरम्भ किया। इस प्रकार पूजापाठ और संस्कत पढ़ने में समय व्यतीत होने लगा। अपने ही वंश के महाशय चुन्नीलाल जी की प्रेरणा से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के उर्दू साप्ताहिक आर्य गजट सं १६६० में पढ़ना आरम्भ किया। छह मास के भीतर ही आर्यसमाज से प्रेम हो गया। पुनः उन का दिया सत्यार्थप्रकाश पढ़कर अपने आप को वैदिक धर्मावलम्बी अनुभव करने लगा। पिताजी इससे दुःखी तो हुए परन्तु मेरे सदाचार और नम्र स्वभाव से हृदय में संतोष भी अनुभव करते थे। निकट ही मीरो वाल ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना हुई। मुझे उपप्रधान बनाया गया। महाशय कष्ण आर्योपदेशक प्रचारार्थ पधारे थे। उनकी प्रेरणा से ३० श्रवण सं.१६७१ को आर्य प्रतिनिधि सभा गुरूदत्त भवन लाहौर का उपदेशक बना। २१ वर्ष तक सेवा की। सभा की आज्ञा से ७ वर्ष तक लायलपुर और ५ वर्ष जडांवाला में प्रचार किया। पाकिस्तान बन जाने पर २३ भाद्रपद २००४ को जिस दिन जूड़ावाला में सैकड़ों हिन्दू और सिखों की हत्या हुई और नगर को मुसलमानों ने पुलिस और मिलिट्री के साथ लूट लिया। मैं एक लारी से भारत पहुंच गया। लेखों द्वारा आरम्भ से ही आर्य गजट की सेवा कर रहा था। अतः इसी सम्बन्ध में दानवीर श्री लाला केसरराम जी नारंग प्रतिपाल शूगर मिल के प्रेम से माघ सं० २००६ से घुघली में धर्माध्यापक के रूप में आकर सेवा की। यह सारा ब्यौरा उपदेशक द्वारा लिखी पुस्तक ''धर्म शिक्षा'' में दिया हैं यह पुस्तक दशम श्रेणी के कोर्स में लगी थी।

***– प्रेमशील महेन्द्रू, फरीदाबाद***

# शोक समाचार

## गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल को पितशोक

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी के पूज्य पिता श्री बंशीधर अग्रवाल का दुखद निधन दिनांक २१ दिसम्बर, २००७ को प्रातः ६.३० बजे हो गया। वे ६३ वर्ष के थे।

स्व० श्री बंशीधर अग्रवाल जी की इच्छा अनुसार उसी समय उनकी आंखें दान कर दी गई तथा उनका पार्थिव शरीर भी चिकित्सा कार्यों के लिए स्थानीय मैडिकल कॉलेज को दान दे दिया गया। श्री अग्रवाल जी मथुरा के रहने वाले थे और महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों के कट्टर पोषक थे। वे नित्य प्रति आर्यसमाज की उन्नति के विषय में चर्चा करते थे तथा वर्तमान के विवादों के सम्बन्ध में चर्चा करते रहते थे। उनका पूरा परिवार उनके पदचिह्नों पर चलते हुए आर्यसमाज की उन्नति के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है। वे अपने पीछे तीन सुपुत्र एवं तीन सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

## मास्टर हरिशूर आर्य को पुत्रशोक

आर्यसमाज कांगड़ी (जम्मू) के प्राण, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी, प्रखर राष्ट्रवादी महामानव स्व० महात्मा कष्णचन्द्र आर्य के पौत्र तथा आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के यशस्वी मन्त्री प्रो० प्रभुशूर आर्य 'सत्यार्थ भास्कर' के भतीजे श्री आदित्य शूर उर्फ रवि सुपुत्र श्रीमती मोहिनी आर्या व मास्टर हरिशूर आर्य का २२ वर्ष की अल्पायु में दिनांक २६ नम्वबर, २००७ को ग्राम कांगड़ी में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ३० नवम्बर, ०७ को स्थानीय शमशान घाट पर किया गया।

## श्री कुलभूषण साहनी को पत्नीशोक

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी की धर्मपत्नी

# श्रीमती पद्मादेवी पंचतत्व में विलीन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व महामन्त्री एवं आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता श्री वैद्य इन्द्रदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती पदमा देवी जी का लगभग ६५ वर्ष की अवस्था में दुःखद देहावसान दिनांक ३१ दिसम्बर २००७ को प्रातःकाल लगभग ६.३० बजे हो गया।

श्रीमती पदमादेवी जी विगत २–३ वर्ष से अस्वस्थ थीं। विगत माह उनकी शारीरिक स्थिति बिगड़ने पर उन्हें दिल्ली के जयपुर गोल्डन अस्पताल में दाखिल करवाया गया। अस्पताल से अवकाश के लगभग ४–५ दिन के उपरान्त ही उनकी आत्मा ईश्वरीय व्यवस्था अनुसार देह–त्याग कर अनन्त यात्रा की ओर बढ़ गई।

श्रीमती पदमा देवी जी का जन्म हरियाणा के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी श्री रघुवीर सिंह जी के परिवार में हुआ। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान, चिन्तक एवं विचारक श्री वैद्य प्रहलाद दत्त जी के सुपुत्र श्री इन्द्रदेव जी के साथ विवाहोपरान्त श्रीमती पदमादेवी जी ने अपनी सन्तानें को आर्य संस्कारों से सुसज्जित किया। सदर बाजार निवास पर अपने परिवार में प्रत्येक आगन्तुक की भरपूर सेवा करना वे सदैव अपना मुख्य दायित्व समझती थीं। उनके सहयोगपूर्ण व्यवहार के कारण श्री वैद्य इन्द्रदेव जी भी सदैव अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक करते रहे। उनके देहावसान का समाचार सुनकर दिल्ली के प्रत्येक हिस्से से उनके परिवार के सदस्य, श्री वैद्य इन्द्रदेव जी के मित्रगण, आर्यजन तथा राजनीतिक और सामाजिक नेता एवं कार्यकर्ता उनके नए आवास अशोक विहार पर एकत्रित होने लगे। उनके पार्थिव शरीर को सायं ४ बजे आर्यसमाज जोरबाग द्वारा संचालित निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य के नेतत्व में पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार

आर्यसमाज अशोक विहार फेज–१, दिल्ली के उप प्रधान श्री कुलभूषण साहनी की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाश साहनी का दिनांक २५ दिसम्बर, ०७ को देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्रद्धांजलि सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री रामनाथ सहगल तथा अन्य लोगों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा सुमन प्रस्तुत किए। डी०ए०वी० संगठन के प्रधान पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा का संवेदना सन्देश सुनाया। इस अवसर पर स्थानीय आर्यसमाजों के अनेक अधिकारियों एवे सदस्यों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्री साहनी के परिवार की ओर से विभिन्न संस्थाओं के लिए १८ हजार रुपये की दान राशि निकाली गई।

## श्री देवराज नारंग का निधन

आर्यसमाज हडसन लाइन, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली एवं मुखर्जी नगर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री देवराज नारंग का दिनांक २४ दिसम्बर, २००७ को अकस्मात निधन हो गया।

## श्री एम० एल० तनेजा का निधन

आर्यसमाज हौजखास, नई दिल्ली के वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे कर्मठ कार्यकर्ता श्री एम० एल० तनेजा जी का दिनांक २७ दिसम्बर को निधन हो गया।

## डॉ० विजय कुमार का देहान्त

चौधरी शुभराम नम्बरदार के सुपुत्र डॉ० विजय कुमार जी का ३ दिसम्बर, ०७ को ७६ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। वे गुकुल झज्जर के अनेक वर्षों तक मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य भी रहे।

सम्पन्न किया गया जिसमें कई आर्यसमाज के धर्माचार्यों ने सहयोग किया।

इस अवसर पर दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री विजय गोयल, विधायक श्री मांगेराम गर्ग, आचार्य यशपाल, भजनोपदेशक, राजवीर शास्त्री, आर्यसन्देश के व्यवस्थापक श्री सुशील महाजन, डॉ० धर्मपाल, श्री हंसराज चोपड़ा, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री राजसिंह भल्ला एवं वेदवाणी के संयोजक श्री राजेन्द्र दुर्गा आदि सहित अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारी तथा कर्मठ सदस्य उपस्थित थे। ***स्व० पद्मादेवी जी की स्मति में श्रद्धांजलि सभा दिनांक ११ जनवरी, ०८ को दोपहर २ बजे से आर्यसमाज अशोक विहार फेज-२, दिल्ली-५२ के पार्क में आयोजित होगी।***

## डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य का निधन

गुरूकुल झज्जर के विद्वान् स्नातक, अनेक ग्रन्थों के लेखक, डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य का देहान्त २६ दिसम्बर ०७ को रात्रि १० बजे हो गया। अन्त्येष्ठि–संस्कार २७ दिसम्बर, ०७ को दोपहर २.०० बजे दयानन्दमठ रोहतक में किया गया। ब्लडकैंसर के कारण उनके दोनों गुर्दे खराब हो गये थे। दिल्ली और रोहतक के मैडिकल हस्पतालों में विगत ४ महीनों से उनकी चिकित्सा चल रही थी किन्तु सफलता नहीं मिली।

रोहतक नगर के निकटवर्ती गांव बालन्द के पिछड़े गरीब परिवार में सन् १६३४ में जन्मे बालक सुकर्मपाल ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव के ही स्कूल में प्राप्त की। आर्यविचारधारा के पिता ने फरवरी १६४७ में गुरूकुल झज्जर के रजत जयन्ती महोत्सव से कुछ दिन पूर्व चौ० न्योनन्दसिंह जी भजनोपदेशक के साथ उसको गुरूकुल झज्जर में पढ़ने के लिए भेज दिया। आचार्य भगवान्देव जी ने गुरूकुल झज्जर के आचार्य पद को स्वीकार कर, गुरूकुल कांगड़ी के शाखा गुरूकुल झज्जर को स्वतंत्र आर्ष पाठविधि के गुरूकुल के रूप में चलाने का संकल्प किया। उस समय गुरूकुल मं लगभग २० ब्रह्मचारी थे। गरीब बागड़ का क्षेत्र था, जहां न नहर थी और न ही बिजली। हिम्मत के धनी कर्मयोगी ब्रह्मचारी भगवान्देव आचार्य ने सीमित साधनों के होते हुए भी उस समय आर्षपाठविधि के विद्वान् तैयार करने का बीड़ा उठाया और सफल परीक्षण किया। ६ जनवरी २००८ रविवार को प्रातःकाल ११ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, गोहानामार्ग, रोहतक के बलिदान भवन में शान्ति सभा सम्पन्न हुई।

***दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।*** **— सम्पादक**

### छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने रचा इतिहास

# वैदिक सम्मेलन सम्पन्न

विगत ७,८ व ९ दिसम्बर ०७ को छत्तीसगढ़ की धरती पर प्रथम बार छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार) के सहयोग से वैदिक सम्मेलन घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में अभूतपूर्व उत्साह एवं महासमारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

७ दिसम्बर,०७ को उद्घाटन सत्र का शुभारंभ स्वस्ति पाठ पूर्व मुख्य अतिथि श्री हेमचन्द्र यादव, मंत्री, जलसंसाधन व परिवहन छ०ग० के दीप प्रज्वलन द्वारा हुआ।

वैदिक सम्मेलन के मुख्य प्रवक्ता दिल्ली से पधारे अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् प्रसिद्ध दार्शनिक आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय ने मध्यकालीन प्रसिद्ध आचार्यों के कार्यों का वर्गीकरण करते हुए वेद पर हुए कार्यों का विश्लेषण किया तथा वेद के महत्व को वैज्ञानिक परिपेक्ष्य में बड़े ही दार्शनिक अन्दाज से अनुप्राश अलंकार की सुललित वक्तता के द्वारा जनसमूह को भाव विमुग्ध कर दिया। सुदूर अमेरिका से अप्रत्याशित रूप में पधारे श्री विक्रमसिंह जी कपूर ने बड़े ही भाव विभोर होकर सभा को आशीर्वाद दिया। सत्र की अध्यक्षता अनेक गुरूकुलों के संचालक अकाल व भूखमरी की मार झेल रहे उड़ीसा के पिछड़े क्षेत्र आमसेना गुरूकुल के कुलाधिपति पू.स्वामी धर्मानन्द जी ने मध्यकाल में हुए वेद एवं वैदिक संस्कृति पर कुठाराघात का वर्णन करते हुए शिवाजी महाराज का हवाला दिया और कहा वेद संस्कृति की सुरक्षा प्रत्येक प्रबुद्ध जन का कर्तव्य है। तीन दिवसीय सभा का संचालन सम्मेलन के संयोजक व सभा के यशस्वी व ऊर्जावान प्रधान आचार्य दयासागर जी ने बड़ी विद्वत्ता, योग्यता एवं कुशलता के साथ सम्पादित किया।

*– आचार्य कर्मवीर, सम्पादक अग्निदूत*

**डी.ए.वी. स्कूल भानुचौक रौता**

### आर्यसमाज मन्दिर जामनगर (गुजरात) का

## ८९ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर जामनगर का ८९ वां वार्षिकोत्सव २० दिसम्बर, ०७ से २३ दिसम्बर, ०७ तक हर्ष पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर ''अथर्ववेद पारायण महायज्ञ'' का आयोजन उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के आचार्य श्री विद्यादेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया।

दिनांक–२३ दिसम्बर, ०७ को ''अथर्ववेद पारायण महायज्ञ'' की पूर्णाहूति के पश्चात् अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिन आचार्य श्री विद्यादेव जी शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें सौराष्ट्र की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। *– सतपाल आर्य, मन्त्री*

### आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में

## माघमेला २००८ के अवसर पर वेद प्रचार शिविर

माघ मेला २००८ दिनांक १४ जनवरी मकर संक्रान्ति से ११ फरवरी, ०८ बसन्त पंचमी तक के अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग द्वारा वहद वैदिक धर्म प्रचार शिविर काली सड़क माघ मेला क्षेत्र में लगाया जा रहा है। आप सब अधिकाधिक संख्या में सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर शिविर को सफल बनाए। कपया अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य दें जिससे समुचित व्यवस्था की जा सके। शिविर में भोजन एवं आवास व्यवस्था निशुल्क होगी।

*– आर्य राजेन्द्र कपूर, मन्त्री, मो०९३३५१०६५८९, ९८८९४८२४८९*

### श्रीवैदिक स्वस्तिपन्था न्यास का द्वितीय वार्षिकोत्सव

~~वेद-धर्म-विज्ञान सम्मेलन एवं~~

**२४ कुण्डीय वैदिक महायज्ञ**

**९ - ७ फरवरी, २००८**

**९ फरवरी :** २४ कुण्डीय वैदिक महायज्ञ एवं सत्य सनातन वैदिक धर्म सम्मेलन ध्वजारोहण पूज्यपाद स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज (गुजरात) यज्ञ, ब्रह्मा– पूज्यपाद आचार्य राजसिंह जी महाराज

### हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए आगे आएं गहस्थ बुजुर्ग

**- प्रेम सिंह 'शेर'**

नई दिल्ली। पूर्व सांसद एवं अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा के संस्थापक श्री बी.एल. शर्मा 'प्रेम सिंह शेर' ने उड़ीसा के कांधामाल जिले में धर्मान्तरण विरोधी मुहिम चला रहे स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती जी

अन्तिम दिन के अन्तिम सत्र की शुरूआत भी सस्वर वेदपाठ से हुई। विशिष्ट अतिथि की आसन्दी से दुर्ग लोकसभा के यशस्वी सांसद माननीय श्री ताराचन्द साहू ने वैदिक सम्मेलन की सफलता के लिए प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा वैदिक संस्कति की गूंज सर्वत्र प्रसारित हो, यही मेरी कामना है। आर्य भारत के मूल निवासी हैं का सप्रमाण विवेचन करते हुए ऐतिहासिक महत्ता का दिग्दर्शन कराते हुए भारत का गौरव गान


# आवश्यकता है

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली को एक ड्राइवर की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। इच्छुक प्रार्थी अपने बायोडैटा सहित दूरभाष 23360150 अथवा 9350070988 पर सम्पर्क करें। – महामन्त्री**



# पुरोहित चाहिए

**आर्यसमाज मन्दिर पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026 को सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जिसे वैदिक रीति से समस्त संस्कार कराने का अनुभव हो। निःशुल्क आवास एवं योग्यतानुसार मानदेय दिया जाएगा। इच्छुक सम्पर्क करें :-**

**रवि चड्ढा, मन्त्री**
**आर्यसमाज पंजाबी बाग (पूर्वी)**
**नई दिल्ली, दूरभाष : 28312960**


## उदालगुड़ी (आसाम) में योग एवं संस्कार शिविर सम्पन्न

डी.ए.वी. स्कूल भानुचौक रौता उदालगुडी, बीटाएडी असम में आर्य समाज के तत्वावधान में योग एवं संस्कार शिविर आचाार्य दीपक शर्मा गुरूकुल शुक्लाई असम के मार्गदर्शन में १३ से १५ दिसम्बर २००७ प्रातः ६.०० बजे से १२.०० बजे सम्पन्न हुआ। पूर्वोत्तर भारत के ४५ वीं यात्रा पर असम आए हुए पूज्य पाद स्वामी सांख्यायन सम्पादक कर्मयोगी दिल्ली के उद्‌बोधन हुए।

१० से १५ दिसम्बर २००७ तक बोडो अशांत क्षेत्र में पूज्यपाद स्वामी संख्यायन रहकर गुवाहाटी रवाना हुए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कैवल्य श्रद्धा तथा सूत्र संचालन श्री अशोक गौतम उपाध्याय जी ने किया इस कुल में चार क्लास में गरीबों के बालक पढ़ रहे हैं।

**– *अशोक कुमार उपाध्याय, सचिव***

(सह संरक्षक न्यास) दिल्ली भजनोपदेश श्री केशवदेव जी शर्मा (सुमेरपुर) मंच संचालक–श्री निर्मलेश जी आार्य (सूरत) मुख्य अतिथि– स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज अध्यक्ष पूज्य आचार्य श्री स्वदेश जी महाराज मुख्यवक्ता पूज्य आचार्य डॉ० सुरेन्द्र जी (गुड़गाँव), वक्तागण–मान्या डॉ० सविता जी गौड़ (सूरत), पूज्य आचार्य राजसिंह आर्य, पूज्य आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, ब्रह्मचारी अमितकुमार आर्य।

**७ फरवरी : वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान सम्मेलन : मुख्य अतिथि–** महामान्य श्री मन्महाराजा गजसिंह जी साहिब (मारवाड़ राज्य के पूर्व नरेश जोधपुर, **अध्यक्ष**–डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी, वक्तागण–पूज्य आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक, पूज्य आचार्य श्री स्वदेश जी, मा० प्रोफेसर सत्यदेव जी वर्मा (वैज्ञानिक भौतिकी) मा. प्रोफेसर जयेश जी देशकर (भौतिकी वैज्ञानिक), मान्यवर डॉ० बसन्त जी मदनसुरे (भौतिकी वैज्ञानिक) –

**श्री वैदिक स्वस्तिपंथा न्यास,**
**भागल-भीम, भीनमाल जालौर**
**२९६९-२२०५७६, ९४१४१८२१७३**

महाराज पर हुए हमले की कड़ी भर्त्सना करते हुए कहा कि नियोगी कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार किसी भी धर्मावलम्बी को जोर–जबरदस्ती, लोभ–लालच देकर धर्म परिवर्तित कराना असंवैधानिक है और उड़ीसा में यह प्रायः सदियों से होता आ रहा है। स्मरण रहे स्वामी लक्ष्माणानन्द सरस्वती जी गत ५० वर्षों से उड़ीसा के बनवासी क्षेत्रों की दुःखी अभावग्रस्त जनता की सेवा कर रहे हैं।

**– *राकेश विश्वकर्मा, प्रेस सचिव***

**आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन, द्वारा**

## श्रीमती कष्ण रसवन्त एवं श्री प्रियतमदास रसवन्त का अभिनन्दन

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के वार्षिकोत्सव के अवसर पर २१ दिसम्बर, ०७ को समाज के अधिकारियों द्वारा श्री प्रियतमदास रसवन्त एवं श्रीमती कष्णा रसवन्त जी का उनकी आर्यसमाज के प्रति सेवाओं के लिए शाल पहनाकर सम्मानित कर अभिनन्दन किया।

**– *लक्ष्मण देव छाबड़ा, मन्त्री***

## आर्यसमाज सूरजमल विहार में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्यसमाज सूरजमल विहार में २६ से ३० दिसम्बर तक पंच दिवसीय यजुर्वेद पारायणा महायज्ञ सम्पन्न हुआ। ३० दिसम्बर रविवार को पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य राजू वैज्ञानिक जी थे। पूर्णाहुति के अवसर पर मधुर भक्ति संगीत भजनों द्वारा सुवर्चा ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य ने सपत्नीक उपस्थित होकर इस कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। कविराज श्री विश्वमुनि जी ने इस अवसर पर आर्यो को ललकार कर सच्चे वैदिक पथ पर चलने हेतु प्रेरित किया। **– *अशोक गुप्ता, प्रधान***

## खेद व्यक्त

*अत्यन्त खेद के साथ सूचित किया जाता है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक दिनांक ३१ दिसम्बर, २००७ से ६ जनवरी, २००८ किन्हीं अपरिहार्य कारणों से प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है।* **– सम्पादक**

साप्तहिक आर्य सन्देश
7 जनवरी, 2008 से 13 जनवरी, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १०/११–०१–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

## शोक समाचार

# श्री जगदीशलाल रहेजा जी का निधन

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट १ के वरिष्ठ सदस्य श्री जगदीश लाल रहेजा जी का अकस्मात दिनांक ८ जनवरी, २००८ को निधन हो गया। वे लगभग ८० वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ६ जनवरी को लोदी रोड शमशान भूमि पर किया गया। अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर हजारों अश्रुपूर्ण नेत्रों ने उन्हें अन्तिम विदाई दी।

उनके परिवार में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष रहेजा तथा छह विवाहित बेटियां हैं।

श्री रहेजा जी वैदिक साधना आश्रम तपोवन के वर्षों तक प्रधान रहे तथा निरन्तर वे उसी की उन्नति तथा व्यवस्था के सम्बन्ध में चिन्तित रहते थे। दिल्ली आने से पूर्व वे लुधियाना मॉडल टाउन में रहते हुए आर्यसमाज के कार्यों को गति प्रदान करते रहे। उनकी स्मति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक ११ जनवरी को आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–१ में आयोजित हुई जिसमें सभा अधिकारियों सहित आस–पास की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री जगदीश लाल रहेजा जी के आर्यसमाज के वरिष्ठ उद्योगपति मुंजाल परिवार से पारिवारिक सम्बन्ध थे। श्री बज मोहनलाल जी मुंजाल एवं श्री सत्यानन्द मुजाल जी के वे बहनोई थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी ने उनके निधन को आर्यसमाज की अपार क्षति बताते हुए शोक व्यक्त किया।

***दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।***

*- सम्पादक*

---

आर्यसमाज रोहिणी के तत्वावधान में

## मकर संक्राति (लोहड़ी पर्व) पंचकुण्डीय महायज्ञ एवं वेदामत ज्ञान महोत्सव

**११, १२, १३ जनवरी, २००८**

वेदकथा : स्वामी माध्वानन्द सरस्वती,
संगीत : नरेश सोलंकी (रेडियो गायक)

*— नरेशपाल आर्य, मन्त्री*

---

आर्यसमाज चूनामंडी पहाडगंज, नई दिल्ली में

## मकर संक्राति पर्व

**१४ जनवरी, २००८**

यज्ञ : सायं ६ बजे
ब्रह्मा : श्री अशोक कुमार शास्त्री
भजन : शकुन्तला गुलाटी, वीरमान चावला, हरबंस राजपाल, शशि विज, अनीता आर्य।
संगीतज्ञ : सुश्री नैनसी प्रज्ञा

---

आर्यसमाज दीवानहॉल चांदनीचौक में

## लोहड़ी एवं मकर संक्राति पर्व के पवित्र अवसर पर

**विशेष यज्ञ, भजन एवं प्रवचन**

**रविवार १३ जनवरी, २००८**

प्रातः ८.३० से ११ बजे तक
आप सब अधिक से अधिक संख्या मे पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

*— कष्णगोपाल दीवान, प्रधान*

---

# आर्यसन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र ***साप्ताहिक "आर्यसन्देश"*** के समस्त वार्षिक सदस्यों ने निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा ***इस मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क १००/- रुपये*** तथा ***आजीवन शुल्क ५००/- रुपये*** है। पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें।

*— सम्पादक*

## दयानन्द संस्थान के संस्थापक स्व० महात्मा वेद भिक्षुः जी की पुण्यतिथि पर
# बुद्धिजीवी गोष्ठी सम्पन्न

शनिवार दिनांक २६ दिसम्बर, २००७ को आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार में स्व० महात्मा वेद भिक्षुः जी की पुण्यतिथि के अवसर पर दयानन्द संस्थान द्वारा एक बुद्धिजीवी गोष्ठी डॉ० श्यामसिंह शशि पद्म श्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्रो० सोमदत्त दीक्षित ने प्राचीन भारत में 'विज्ञान विषय पर बोलते हुए अपने सारगर्भित अभिभाषण में दर्शाया कि किस प्रकार वैदिक ग्रन्थों में नकारात्मक व सकारात्मक ऊर्जा का सामंजस्य है तथा कर्मयोग और ज्ञानयोग की प्रेरणा में दिव्यता के दर्शन होते हैं।

इससे पूर्व श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर तथा दयानन्द संस्थान के मंत्री डॉ० धर्मवीर जी ने महात्मा वेद भिक्षुः जी का सक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि वे बड़े स्पष्टवादी थे और अपनी बात को बड़े सपाट तरीके से कहते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन वेदों के प्रचार– प्रसार में लगा दिया। उनके लगाए हुए पौधे 'जनज्ञान' को पंडिता राकेश रानी जी बड़े सुव्यवस्थित ढंग से चला रही हैं। इस अवसर पर गुरूकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति डॉ० धर्मपाल ने महात्मा वेद भिक्षुः जी को श्रद्धांजली देते हुए कहा वे स्व० भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः जी का पूर्व नाम) के लेखों से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने सन् १९८० में आर्य समाज शालीमार बाग की स्थापना पर ध्वजारोहण किया था। इस असवर पर आशुकवि विजय गुप्त जी ने अपनी कविता के माध्यम से वेदभिक्षुः जी को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की। इस अवसर पर श्री हरिसिंह पाल आकाशवाणी शिमला के कार्यक्रम अधिकारी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ० कर्णदेव शास्त्री के स्वस्तिवाचन एवं पं० राजवीर शास्त्री के मधुर भजनों से हुआ।

गोष्ठी का संचालन श्री बनारसी सिंह जी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन आर्यसमाज हनुमान रोड़ के मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा ने किया।

*– राधेश्याम शर्मा, कार्यालय प्रमुख*

## आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-७ का
# ७८वां वार्षिकोत्सव एवं सामवेदीय यज्ञ

**१८ से २० जनवरी, २००८**

**सामवेदीय यज्ञ :** प्रतिदिन प्रातः ७ से ६.३० बजे
**सान्निध्य :** परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
**ब्रह्मा** : आचार्य जयेन्द्र कुमार जी **यज्ञ संयोजक :** आचार्य कुंवरपाल शास्त्री
**वेदपाठी :** गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारी एवं गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणीयां
**ध्वजारोहण :** श्रीमती उमा सिंह
**भजन :** आर्य भजनोपदेशक कु० उदयवीर एवं साथी (मथुरा वाले)
**वेद प्रवचन :** स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती एवं आचार्य जयेन्द्र कुमार
**भजन-प्रवचन :** रात्रि ७.०० बजे से ६.०० बजे तक

**आर्य महिला सम्मेलन : १६ जनवरी दोपहर २ से ५ बजे**

**संयोजक :** आशा गर्ग, वीणा आर्या (मन्त्रिणी स्त्री आर्यसमाज)
**अध्यक्षता :** श्रीमती स्वर्ण गुप्ता (पूर्व प्रधाना, स्त्री आर्यसमाज)

**पूर्णाहुति एवं समापन समारोह : २० जनवरी, २००८**
**मुख्य समारोह : प्रातः १० से १.३० बजे तक**

**संयोजक :** श्री नरेन्द्र आर्य **अध्यक्षता :** श्री राजसिंह भल्ला जी
**मुख्य अतिथि :** श्री अर्जुन देव परचन्दा
**वक्ता :** सर्वश्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, डॉ० महेश विद्यालंकार, संजय शास्त्री एवं आचार्य जयेन्द्र कुमार
**अभिनन्दन :** लाला श्याम सुन्दर जी आर्य

आप सभी से निवेदन है कि इष्ट मित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम शोभा बढ़ाएं एवं पुण्य लाभ के भागी बनें।

***शारदा आर्या,*** प्रधान ***वीणा आर्या,*** मन्त्री

# भ्रम फैलाना बन्द करें स्वामी अग्निवेश!

वैदिक सार्वदेशिक के गतांक में प्रकाशित किया गया है कि कैप्टन देवरत्न आर्य जी ने हैदराबाद सम्मेलन में आने के लिए अपनी स्वीकति दे दी थी। इस सम्बन्ध में कैप्टन देवरत्न आर्य जी ने फोन पर बताया कि कि ऐसी स्वीकति, आश्वासन हैदराबाद आने के सम्बन्ध में किसी को नहीं दिया गया। अतएव भ्रांति न फैले इसलिए यह सूचना प्रकाशित की जा रही है। – *प्रकाश आर्य, मन्त्री सार्वदेशिक सभा*

**सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**